# इकाई 8 आर्थिक फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति

**इकाई की रूपरेखा**


8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 आर्थिक फीचर का अभिप्राय

8.3 आर्थिक फीचर का महत्व

8.4 आर्थिक फीचर के प्रकार

- 8.4.1 आर्थिक विकास संबंधी फीचर
- 8.4.2 वाणिज्य व्यापार संबंधी फीचर
- 8.4.3 बजट संबंधी फीचर
- 8.4.4 अन्य आर्थिक फीचर

8.5 विषय का चयन

- 8.5.1 रुचि और विशेषज्ञता
- 8.5.2 प्रकाशन की प्रकृति
- 8.5.3 विषय की प्रासंगिकता

8.6 सामग्री का संकलन

- 8.6.1 विषय पर शोध और अध्ययन
- 8.6.2 तथ्यों का संकलन
- 8.6.3 साक्षात्कार
- 8.6.4 अन्य सामग्री

8.7 सामग्री का संयोजन और संपादन

8.8 लेखन की प्रस्तुति

- 8.8.1 आरंभ
- 8.8.2 मध्य
- 8.8.3 अंत और शीर्षक

8.9 भाषा और शैली

8.10 सारांश

8.11 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

## 8.0 उद्देश्य

समाचार पत्र और फीचर लेखन से संबंधित व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम की यह आठवीं इकाई है। इस इकाई में आप आर्थिक और बिजनेस फीचर के बारे में अध्ययन करेंगे और इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- आर्थिक और बिजनेस फीचर का अभिप्राय स्पष्ट कर सकेंगी/सकेंगे;
- आर्थिक और बिजनेस फीचर के लिए उपयुक्त विषय का चयन कर सकेंगी/सकेंगे;
- फीचर लेखन के लिए आवश्यक सामग्री का संकलन कर सकेंगी/सकेंगे;
- संकलित सामग्री पर विचार करके फीचर की रूपरेखा बना सकेंगी/सकेंगे;
- आर्थिक विषय पर फीचर लेखन की विधि समझने के बाद फीचर लेखन कर सकेंगी/सकेंगे;और
- फीचर के लिए उपयुक्त शैली और भाषा का प्रयोग कर सकने की क्षमता बढ़ा सकेंगी/सकेंगे।

## 8.1 प्रस्तावना

समाचार पत्र और फीचर लेखन पाठ्यक्रम के दूसरे खंड की इस तीसरी इकाई में आप आर्थिक और बिजनेस फीचर का अध्ययन करेंगे। इससे पहले की इकाई में आपने सामाजिक और सांस्कृतिक फीचर लेखन के बारे में अध्ययन किया था। सामाजिक, सांस्कृतिक और खेलकूद आदि की तरह आर्थिक क्षेत्र भी विशिष्ट प्रकार का क्षेत्र है। इस क्षेत्र में लेखन के लिए ऐसे पत्रकारों को आगे बढ़ना चाहिए जो इस विषय की तकनीकी बातों को भली भांति जानते हों। अर्थशास्त्र एक ऐसा विषय है जिसमें खास तरह की प्रवीणता की आवश्यकता है। अर्थ का महत्व सर्वाधिक होने के बावजूद इसके तकनीकी पहलुओं को समझने में आम पाठक को प्रायः कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इन कठिनाइयों के कारण विषय शुष्क और नीरस लगने लगता है। लेकिन रोचक तथ्य यह है कि सभी लोगों को रकम, अर्थ, रुपया अच्छा लगता है। जमीन–जायदाद की चर्चा में उनका मन लगता है, लेकिन आर्थिक विषय पर लिखे गए लेख–फीचर उबाऊ लगते हैं। इसलिए सबसे पहले आर्थिक लेखों में रोचकता पैदा करनी होगी। जो लेखक आर्थिक फीचर लिखना चाहते है उन्हें अपनी शैली में रोचकता पैदा करने की ओर विशेष ध्यान देना होगा। इस इकाई में हमने सबसे पहले आर्थिक फीचर के अर्थ पर विचार किया है। यानी यह कि इसके अंतर्गत किन–किन विषयों को शामिल किया जा सकता है और फीचर के लिए विषय के चयन का आधार क्या होना चाहिए। विषय का चयन करने के बाद सामग्री का संकलन कैसे किया जाए और संकलित सामग्री के आधार पर फीचर की रूपरेखा कैसे बनाई जाए, इस पर भी इकाई में विचार किया गया है।

फीचर के लेखन का आरंभ किस प्रकार करना चाहिए, उसके मध्य में विषय सामग्री किस तरह प्रस्तुत करनी चाहिए और फीचर का अंतिम भाग कैसे लिखना चाहिए, इन सभी पक्षों के बारे में उदाहरण द्वारा समझाया गया है। फीचर का शीर्षक देने पर भी विचार किया गया है। आर्थिक और बिजनेस फीचर की भाषा का विशेष महत्व है।

इसमें कुछ विशेष प्रकार की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग होता है। आपको उसके बारे में भी बताया जाएगा। इकाई में दिये गये बोध प्रश्नों और अभ्यासों को करने से आप स्वयं फीचर लेखन में कुशलता बढ़ा सकेंगे।

## 8.2 आर्थिक फीचर का अभिप्राय

किसी देश, समाज या संपूर्ण विश्व की आर्थिक स्थिति के संबंध में लिखा गया फीचर आर्थिक फीचर कहलाता है। राजनीति और अर्थव्यवस्था का घनिष्ठ संबंध है। शासन तंत्र के स्वरूप से आर्थिक नीति की दिशा निर्धारित होती है। समाजवादी शासनतंत्र की अर्थव्यवस्था अलग होगी जबकि पूंजीवादी शासनतंत्र की अर्थव्यवस्था अलग। इसके अलावा राजनीति की स्टीयरिंग सीट पर बैठे राजनेता की सोच से भी अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। जब किसी देश की राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन होता है तो उसका असर अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। इसी प्रकार जब देश में, बाढ़ का प्रकोप होता है और उत्पादन घट जाता है या निर्यात व्यापार कम हो जाता है तब राजनीति भी प्रभावित होती है। राजनीतिक स्थिरता के लिए अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होना आवश्यक है। ऐसे कई उदाहरण हैं जब अर्थव्यवस्था डावांडोल होने पर सरकारें गिर गयीं या बदल गयीं। आर्थिक शक्ति ही देश की असली शक्ति है। किसी देश की शक्ति या प्रगति का अंदाजा केवल उसकी फौजी ताकत से नहीं लगाया जा सकता। इसके लिए प्रति व्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय के आंकड़ों को देखा जाता है। यह भी देखना होता है कि सबको जीवन की बुनियादी आवश्यकताएं सुलभ हो रही हैं या नहीं। कृषि और औद्योगिक उत्पादन अर्थव्यवस्था के मुख्य आधार स्तंभ हैं। जब इन दोनों क्षेत्रों में स्थिति संतोषजनक होती है तभी देश खुशहाली की ओर बढ़ता है। जिस प्रकार साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है उसी तरह वाणिज्य व्यापार को अर्थव्यवस्था का दर्पण माना जाता है। उत्पादन या औद्योगिक प्रगति के लाभ वाणिज्य व्यवसाय के जरिए ही जनसाधारण तक पहुंचता है।

आप अच्छी तरह समझ गये होंगे कि देश के विकास में अर्थव्यवस्था का कितना महत्व है। अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं की जानकारी समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाले आर्थिक लेखों या आर्थिक फीचर से हो सकती है। यह सही है कि समाचार पत्रों का ध्यान आर्थिक फीचर की ओर जरा देर से गया। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के इस युग में अब हिंदी समाचार पत्र लगातार आर्थिक फीचर प्रकाशित कर रहे हैं। आर्थिक फीचर की परिपाटी अंग्रेजी अखबारों से शुरू हुई थी लेकिन इस फीचर का लाभ आम जनता को नहीं मिल पाता था। बाद में हिंदी के प्रमुख समाचार पत्रों ने धीरे–धीरे आर्थिक फीचर प्रकाशित करना शुरू किया। अब ऐसे फीचर लगातार छप रहे हैं। इन फीचरों में खबरों से जुड़े हुए सवाल और उनके विश्लेषण पाठकों के सामने पेश किये जाते हैं। आर्थिक समाचारों की विवेचना फीचर में की जाती है जिससे पाठकों के सामने खबरों के पीछे और खबरों के आगे के प्रभाव का खुलासा हो सके।

## 8.3 आर्थिक फीचर का महत्व

आर्थिक समस्याओं पर फीचर के जरिए समाज और देश की सेवा की जा सकती है। सदियों से शोषित, पीड़ित और उपेक्षित तबके की दुर्दशा के चित्रण और बेहतरी के लिए सुझावों के जरिए आप समाज और सरकार की मदद कर सकते हैं। गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले देश के करोड़ों लोगों की कठिनाइयों की ओर ध्यान

आकर्षित करके आप बता सकते हैं कि गरीबी का उन्मूलन कैसे किया जाए। बेरोजगारी, औद्योगिक विकास की राह में आने वाली दिक्कतों आदि पर भी फीचर लिखा जा सकता है। कोई अनिवासी भारतीय जब यहां उद्योग लगाना चाहता है तो उसे किस तरह की लालफीताशाही का सामना करना पड़ता है, यह भी आपके फीचर का विषय हो सकता है। कृषि प्रधान देश होने के बावजूद कृषि के पिछड़ेपन पर फीचर समाज का भला कर सकते हैं।

समाज के निचले तबकों की व्यावहारिक कठिनाइयों के अलावा सरकार की आर्थिक नीतियों की समीक्षा भी आपके फीचर में हो सकती है। इन नीतियों से आम लोगों की आकांक्षाओं, व्यापारियों, उद्योगपतियों की आकांक्षाओं पर फीचर लिखा जा सकता है। 'शेयर बाजार की बजट से उम्मीद' भी आर्थिक फीचर का विषय हो सकता है। बजट के बाद इसका विश्लेषण, आम लोगों पर प्रभाव, उद्योग एवं कृषि पर प्रभाव, कर ढांचे में बदलाव आदि पर अच्छे फीचर लिखे जा सकते हैं। बजट के उपबंधों में जहां कहीं ऐसी बात मिले जिसमें संशोधन की जरूरत हो तो उसका सुझाव फीचर में दिया जा सकता है। बजट एक ऐसा विषय है जिसके इर्द–गिर्द सभी आर्थिक हलचलें होती हैं। इसलिए बजट के साथ जोड़कर शेयर बाजार, विदेशी निवेश, कर ढांचे, कृषि, उद्योग आदि पर भी फीचर किये जा सकते हैं। रेल बजट से भी आम जनता का घनिष्ठ संबंध है। यात्री भाड़े और माल भाड़े की महंगाई आदि को जोड़कर फीचर किया जा सकता है। आर्थिक फीचर के विषय बहुत व्यापक होते हैं। जीवन का हर पहलू अर्थ से जुड़ा है। उपभोक्ता बाजार, सर्राफा आदि में ऑन लाइन फ्यूचर ट्रेडिंग का नया ट्रेंड शुरू हुआ है। इन सभी विषयों पर फीचर लिख कर बताया जा सकता है कि किस तरह से यह व्यवस्था कीमतों को नियंत्रित करने में मदद देती है। आर्थिक फीचर में उपभोक्ताओं को जरूर शामिल किया जाना चाहिए – 'उपभोक्ता राजा है' यह बात आम उपभोक्ता जाने, इसलिए बजट के तमाम मुदद् फीचर में बताने चाहिए। उपभोक्ताओं पर ज्यादती को भी प्रकाश में लाया जाना चाहिए। अर्थ–व्यवस्था में जुड़े महकमों में अनियमितताएं और भ्रष्टाचार भी आर्थिक फीचर के अच्छे विषय हो सकते हैं। यह ध्यान रखना चाहिए कि रेल और आम बजट समाज के सभी क्षेत्रों पर व्यापक असर डालते हैं। इसके विभिन्न पहलुओं को व्यावहारिक स्तर पर उजागर करना जरूरी है।

## 8.4 आर्थिक फीचर के प्रकार

आर्थिक फीचर के महत्व की चर्चा के दौरान हमने उसके क्षेत्र और व्याप्ति की चर्चा की है। कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसका संबंध अर्थ से न हो। अर्थ की दुनिया बहुत व्यापक है। इसे ठीक से समझने–समझाने के लिए आर्थिक फीचर को निम्नलिखित प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं–

– आर्थिक विकास संबंधी फीचर

– वाणिज्य व्यापार संबंधी फीचर

– बजट संबंधी फीचर

– अन्य आर्थिक फीचर

आइए, इन पर अलग–अलग विचार करें।

### 8.4.1 आर्थिक विकास संबंधी फीचर

आर्थिक विकास से देश की प्रगति का ग्राफ जुड़ा हुआ है। जिस देश का आर्थिक विकास ठीक से होता है उसे हम प्रगति करने वाले राष्ट्र की श्रेणी में रखते हैं। विकास के मुख्य रूप से दो क्षेत्र हैं – कृषि और उद्योग। कृषि, भोजन संबंधी मूलभूत आवश्यकता को पूरा करती है तो उद्योग जीवन के अन्य क्षेत्रों की जरूरतों को पूरा करने में सहायक होते हैं। भारत अब भी कृषि प्रधान देश है। देश की आय का बहुत बड़ा भाग कृषि उत्पादों से ही प्राप्त होता है। लेकिन कृषि के क्षेत्र की कई समस्याएं भी हैं। किसानों की हालत संतोषजनक नहीं है। कृषि के लिए कर्ज के जाल में फंसने के कारण किसानों की आत्महत्या तक के कई मामले प्रकाश में आते रहते हैं। छोटे किसानों और खेतिहर मजदूरों को भुखमरी तक का सामना करना पड़ता है। उन्हें उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। अनाज के सामूहिक भंडारण की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। हमारे देश की खेती का मूल आधार मानसून है। मानसून पर टिकी खेती के कारण कहीं अतिवृष्टि का संकट आता है तो कहीं अनावृष्टि का। बाढ़ और सूखे की चपेट में खेती का बुरा हाल रहता है। मानसून की भविष्यवाणी प्राचीन काल से ही की जाती है। घाघ और भड्डरी जैसे किसान कवियों के देसी फार्मूले से लेकर मौसम विभाग की भविष्यवाणियों तक पर किसान भरोसा करते हैं। लेकिन मौसम विभाग की भविष्यवाणियों की असफलता दर काफी ऊंची है। मौसम विभाग दूसरे विभागों के साथ तालमेल कर बेहतर परिणाम दे सकता है। इस विषय पर प्रकाशित एक फीचर का अंश देखें–

*''1988 में जब से मौसम विभाग की भविष्यवाणियों का प्रचलन बढ़ा है, तब से इसकी असफलता की दर भी काफी बढ़ी है। अभी तक असफलता की यह दर 65 फीसदी तक है। हालांकि मौसम विभाग काफी कठिनाई से ''पावर रिग्रेशन' के मानकों के आधार पर कम या ज्यादा सटीक भविष्यवाणी करने का दावा ठोक सकता है क्योंकि इस 'पावर रिग्रेशन'के ही सांख्यिकीय उपकरणों से वह लैस है। लेकिन सन् 2002 के सूखे के दौरान गलत भविष्यवाणियों की वजह से मौसम विभाग की काफी आलोचना हुई थी। आलोचना की वजह रही मौसम विभाग की लचर वैज्ञानिक व्यवस्था और आंकड़े इकट्ठे करने की पद्धति। मानसून की भविष्यवाणी पर हाल ही में संपन्न एक कांफ्रेंस में अमेरिका के जाने–माने मौसम वैज्ञानिक जगदीश शुक्ला ने यह सवाल उठाया कि भारतीय मौसम विभाग भारतीय सांख्यिकी संस्थान की सहायता क्यों नहीं लेता जबकि पूरी दुनिया में ऐसा ही हो रहा है। वाकई यह विचारणीय सवाल है।''*

**(हिन्दुस्तान, 11 जुलाई 2005)**

उद्योग से संबंधित फीचर भी आर्थिक फीचर के अंतर्गत आते हैं। उद्योग–व्यवसाय संबंधी समस्याओं, देश की औद्योगिक प्रगति, विकासशील और विकसित देशों से औद्योगिक संबंध, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के उद्योग की समस्याएं, विनिवेश के मुद्दे, कुटीर और लघु उद्योगों की समस्याएं आदि विभिन्न विषयों को इसके अंतर्गत लिया जा सकता है।

कृषि और उद्योग का लक्ष्य उत्पादन बढ़ाने से भी अधिक कुछ होता है। उद्योग को यह देखना होता है कि वह किस प्रकार देश की आवश्यकताओं और साथ ही अन्तरराष्ट्रीय तकनीक के अनुरूप है। विश्व अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ जाने के बाद उद्योग का लक्ष्य पहले की तुलना में काफी विशाल हो गया है। उद्योग की दुनिया में कारपोरेट संस्कृति की शुरूआत हो गई है। परम्परागत उद्योग अब अपने ढर्रे को बदल

रहे हैं और विश्व में प्रचलित मानकों को अपना रहे हैं। ये मानक एकाउटिंग के हों या श्रम शक्ति प्रबंधन के; सभी मॉडल विकसित देशों के अनुरूप चल रहे हैं। यहां हम यह जांच सकते हैं कि ये मानक भारतीय परिवेश में कितने सटीक बैठते हैं। इन विषयों पर बहुत से आर्थिक फीचर लिखे जा सकते हैं। विनिवेश और निजीकरण के मुद्दे पर भेल के मामले में सरकार और उसे समर्थन देने वाले वामपंथी दलों के बीच तनातनी हो गयी। वामपंथी मोर्चा नहीं चाहता कि भेल का और विनिवेश हो। इस विषय पर एक फीचर के अंश पर नजर डालें–

*''भेल की 33 फीसद हिस्सा पूंजी बेचे जाने का अनुभव बिल्कुल साफ कर देता है कि इस तरह का विनिवेश सिर्फ एक हिस्से तक सीमित नहीं रहता। गौरतलब है कि अब तक बेचे गए भेल के कुल 33 परसेंट शेयरों में से 22.74 फीसद विदेशी संस्थागत निवेशकों के हाथों में पहुंच चुके हैं। दूसरी ओर मजदूरों के हाथों सिर्फ 0.12 फीसद शेयर बचे हैं और भारतीय छोटे निवेशकों के हाथों में सिर्फ 0.89 फीसद। याद रहे कि 26 फीसद शेयर हाथ में आने पर विदेशी संस्थागत निवेशक भेल के बोर्ड में अपने प्रतिनिधि बैठाने और इस तरह कंपनी के निर्णयों को प्रभावित करने की स्थिति में होंगे। इस क्रम में भेल के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिद्वद्वियों को भी इस कंपनी की सभी अदरूनी आर्थिक जानकारियाँ मिल रही होंगी। नवरत्न कंपनियों के मामले में यह पहलू खास तौर पर प्रासंगिक है।''*

**(नवभारत टाइम्स, 8 जुलाई, 2005)**

### 8.4.2 वाणिज्य व्यापार संबंधी फीचर

अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण पक्ष वाणिज्य और व्यापार है। वस्तुओं और सेवाओं का क्रय–विक्रय व्यापार है और वाणिज्य के अंतर्गत खरीद–बिक्री, विनिमय, लेन–देन आदि सभी पक्ष आ जाते हैं। बाजार व्यवस्था, शेयर बाजार, बैकिंग, वस्तुओं का क्रय–विक्रय और विनिमय, वित्तीय ऋणों का लेन–देन, कीमतों का उतार–चढ़ाव आदि सभी पक्ष वाणिज्य–व्यापार के अंतर्गत आएंगे। आज बैकिंग व्यवस्था काफी मजबूत हो गई है। वेतन से लेकर बिजनेस के सभी बड़े विनिमय बैंकों के माध्यम से होते हैं। तकनीक ने बैकिंग क्षेत्र को और भी मजबूत कर दिया है। बिना बैंक गए इंटरनेट, एटीएम, मोबाइल आदि के जरिए बैकिंग का कार्य सफलता से किया जाने लगा है। शेयर बाजार में खरीदारी के लिए अब जाने की जरूरत नहीं। सभी कुछ इंटरनेट के जरिए कम्प्यूटर स्क्रीन पर उपलब्ध है। माउस के क्लिक से आप इधर शेयर खरीदते हैं और उधर आपके खाते से निर्दिष्ट रकम चली जाती है और शेयर आपके डिमैट खाते में जमा हो जाता। जाहिर है, जब इस क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई है तो इससे जुड़े मसले भी खूब उठेंगे वे सभी मसले आपके फीचर के विषय बन सकते हैं। शेयर बाजार की तेजी अर्थव्यवस्था में मजबूती का आईना भी होता है। आइए, एक नजर डालें इसी विषय पर प्रकाशित एक फीचर के अंश पर–

*''शेयर बाजार अब तक सारे रिकार्ड तोड़ कर सात हजार से भी ऊपर चला गया है। बाजार के लोगों का कहना है कि यह कितना ऊपर जाएगा, अभी किसी को पता नहीं है क्योंकि मार्केट में तो आग सी लगी है। वैसे मुझे तो अचानक बाजार बढ़ने की कोई वजह मालूम नहीं पड़ रही है, लेकिन लोग कह रहे हैं कि अंबानी भाइयों में समझौता हो जाने की वजह से बाजार इतना बढ़ रहा है। ऐसे में लोगों की जानकारी के लिए यह बता देना चाहता हूं कि जब यह झगड़ा अपने चरम पर था तब भी शेयर बाजार ने सात हजार के सूचकांक को छुआ था। इस बार यह दो सौ प्वाइंट ऊपर गया है।*

*इसका मतलब है कि अर्थव्यस्था में जो मजबूती आ रही है तथा भारत में निवेश की बढ़ती संभावनाओं के कारण शेयर बाजार में जबरदस्त पूंजी लग रही है उसी के चलते सूचकांक ऊपर बढ़ता जा रहा है।''*

**(दैनिक जागरण, 25 जुलाई, 2005)**

भारत के आर्थिक क्षेत्र में उदारवादी नीतियों के शुरू होने और संचार तकनीक के विकास के चलते विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ने के कारण कई नए–नए आर्थिक विस्तार सामने आए हैं। इस नए बिजनेस में बीपीओ (बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग), कॉल सेन्टर के जरिए बिजनेस को बढ़ावा देने जैसी चीजें सामने आई हैं। कॉल सेन्टर, बीपीओ का अपना अलग गणित है। ये सभी कार्य या बिजनेस आर्थिक फीचर के लिए बढ़िया विषय हो सकते हैं। पेट्रोलियम, गैस आदि की मांग और आपूर्ति के बीच का समन्वय और विरोधाभास भी आर्थिक फीचर के विषय हो सकते हैं। नई अर्थव्यवस्था में संगठित रिटेलिंग की शुरुआत हुई है। मार्केटिंग के लोग इसे शुभ लक्षण मानते हैं। हालांकि परम्परागत सोच यह बताती है कि इसके प्रचलन से आम छोटा व्यापारी और दुकानदार समाप्त हो जाएगा। इस विषय पर एक फीचर का अंश देखें –

*''देश में मध्यम आय वर्ग की संख्या बढ़ाने में खुदरा व्यापार की अच्छी भूमिका रही है। आखिरी राष्ट्रीय आय में 15 प्रतिशत योगदान व्यापार का है मुख्यतः खुदरा व्यापार का। इतने बड़े क्षेत्र में बड़ी कंपनियाँ इस आम आदमी के क्षेत्र में आकर, उसे वहां से खदेड़ कर एक दीर्घकालिक नजरिए से स्वयं अपने पैरों पर सामूहिक स्तर पर, कुल्हाड़ी मार रही हैं। खुदरा क्षेत्र की राष्ट्रीय आय तेजी से बढ़ी है परंतु रोजगार की बढ़त के साथ। बड़ी कपनियों के तत्वावधान में आय में बढ़त होगी पर रोजगार घटेगा —————————— मध्यम आय वर्ग को इन बड़े, आधुनिक भंडारों में खरीदारी की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। उन्हें रोजगार के अवसरों की तंगी भुगतनी पड़ेगी। साथ ही शेयर बाजार और बैंकों में मध्यम आय वर्ग की बचत बटोर कर बड़े व्यवसायी स्वयं मध्यम वर्ग के ही व्यावसायिक अवसर घटाएंगे।''*

**(हिन्दुस्तान, 10 जुलाई 2005)**

### 8.4.3 बजट संबंधी फीचर

बजट क्या है? सरकार हर साल देश का बजट पेश करती है। बजट का सामान्य अर्थ है– आमदनी और खर्च का ब्यौरा। इसके अंतर्गत बीते वित्त वर्ष के आय–व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया जाता है और आगामी वित्त वर्ष के आय के प्रावधानों और व्यय के अनुमानों का विवरण संसद में पेश किया जाता है। हमारे देश में हर वर्ष फरवरी माह के अंत में रेल बजट और आम बजट पेश किए जाते हैं। इस बजट से देश के सभी लोगों का गहरा संबंध होता है। रेल बजट में रेल भाड़ा और माल भाड़े में परिवर्तन की जानकारी दी जाती है। साथ ही यह भी बताया जाता है कि कौन–कौन सी नई रेलगाड़ियां चलेंगी, कौन से नए रूट बनेंगे, माल भाड़े का क्या स्वरूप होगा, आदि। आम बजट में नए कर प्रस्ताव आते हैं। आम बजट में जनता के लिए आयकर में छूट आदि की बातें महत्वपूर्ण होती हैं तो व्यावसायिक वर्ग के लिए उत्पाद कर आदि की। इन सभी के तालमेल से यह पता चल पाता है कि कौन–सी वस्तुएं सस्ती होंगी और कौन–सी महंगी। बजट आने से पहले समाज के विभिन्न वर्ग उद्योगपति, व्यवसायी, नौकरी–पेशा लोग, मजदूर–किसान आदि अपने–अपने ढंग से बजट को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। विभिन्न उद्योग चैम्बरों के प्रतिनिधि वित्त मंत्री से मिलकर अपनी

मांगें उनके समक्ष रखते हैं। व्यवसायियों और उद्योग विशेष के प्रतिनिधिमंडल भी वित्तमंत्री से मिलकर अपनी समस्याएं रखते हैं और अपनी सुविधा के लिए कर ढांचे में परिवर्तन की मांग करते हैं। मजदूरों–किसानों की मांग उनके संगठनों के द्वारा पेश की जाती हैं। उनके इस प्रयत्न में फीचर लेख काफी मददगार हो सकते हैं। बजट से पहले अर्थशास्त्रियों की राय भी फीचर का विषय बन सकती हैं। बजट आने के बाद उस पर समाज के विभिन्न वर्गों की राय, प्रतिक्रिया, विशेषज्ञों और अर्थशास्त्रियों के विचारों को भी फीचर लेखक प्रस्तुत कर सकता है। इन फीचरों के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों की राय को समाज और सरकार के सामने पेश किया जा सकता है।

### 8.4.4 अन्य आर्थिक फीचर

आर्थिक फीचर के विषय बहुत व्यापक हैं। इन विषयों को सिर्फ कुछ प्रकारों में नहीं बांटा जा सकता है। आर्थिक विषय कई तरह के हो सकते हैं। आदिवासियों, उपेक्षित वर्गों आदि के लिए शुरू की गई योजनाएं, उनके उत्थान की वर्तमान स्थिति, बेरोजगारी, गरीबी, जनसंख्या वृद्धि आदि सभी विषयों के आर्थिक पक्षों को फीचर में दिया जा सकता है। आर्थिक और तकनीकी संपन्नता को दिखाने वाले आर्थिक फीचर भी लिखे जा सकते हैं। उदाहरण के रूप में यहां एक फीचर का अंश देखें कि कैसे बाजारों के मुकाबले गांवों में एटीएम हैं और वे अपना लेन–देन इसी के माध्यम से करते हैं।

*''शायद बड़े शहरों में रहने वाले लोगों में से अधिकांश को यह गलतफहमी होगी कि सभी बैंक एटीएम सुविधा देने के लिए उन्हें ही तरजीह देते हैं। क्योंकि समृद्धि और तकनीकी ज्ञान के मामले में वे भारत के ग्रामीण या कस्बाई लोगों से कहीं आगे हैं। अपनी आंखें खोलने के लिए उन्हें तमिलनाडु के ग्रामीण इलाके में बसे महज 25 हजार किसानों की आबादी वाले नेवलीकुप्पम जिले में जरूर जाना चाहिए। यहां के गन्ना उत्पादक किसानों में से कोई भी नकद भुगतान स्वीकार नहीं करता। इसी वजह से इस क्षेत्र में बने एटीएम और उनके उपभोक्ताओं की तादाद किसी भी बड़े शहर के पॉश इलाकों की तुलना में कहीं ज्यादा हैं। यही नहीं, इस छोटे से इलाके में 23 बैंकों की शाखाओं का इंटरनेट बैंकिंग में जुड़ा जाल भी बिछा हुआ है। इसी के मद्देनजर सड़कों के किनारे कियोस्क भी बनाए गए हैं, जिनकी सहायता से यहां के लोग अपना बैंक बैंलेस जानने या मनी ट्रांसफर जैसी अत्याधुनिक इंटरनेट बैंकिंग सुविधाओं का धड़ल्ले से इस्तेमाल करते हैं।''*

**(नवभारत टाइम्स, 16 दिसंबर, 2004)**

**बोध प्रश्न 1**

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) आर्थिक फीचर से क्या आप समझते हैं? इसका महत्व बताइए।

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

2) आर्थिक विकास से संबंधित फीचर के अंतर्गत किन–किन विषयों को शामिल किया जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।

......................................................................................................................

......................................................................................................................

......................................................................................................................

......................................................................................................................

3) उदारवादी अर्थव्यवस्था और तकनीक के युग में नए रोजगार के अवसरों पर प्रकाश डालिए।

......................................................................................................................

......................................................................................................................

......................................................................................................................

......................................................................................................................

......................................................................................................................

4) बजट किस तरह से आम जीवन को प्रभावित करता है?

......................................................................................................................

......................................................................................................................

......................................................................................................................

......................................................................................................................

......................................................................................................................

## 8.5 विषय का चयन

आर्थिक फीचर लेखन एक विशिष्ट विधा है। इस क्षेत्र में लेखन का कार्य उसी को करना चाहिए जिसकी इस विषय में रूचि हो और विषय की समझ भी हो। आर्थिक फीचर का कार्य काफी उत्तरदायित्व से भरा है। विषय की समझ के बगैर आर्थिक फीचर सटीक नहीं हो सकता है। इस क्षेत्र के विषय का चयन भी सूझबूझ के साथ होना चाहिए। विषय की प्रासंगिकता और महत्व के बारे में सोचना भी जरूरी है। विषय को कितना सारगर्भित रखा जाए, यह इस बात पर निर्भर है कि फीचर किस तरह की पत्रिका या समाचार पत्र में प्रकाशित होगा और उसका पाठक वर्ग कौन है। आइए, इन सब पक्षों पर विचार करें ।

### 8.5.1 रुचि और विशेषज्ञता

आर्थिक फीचर के लिए सबसे पहली जरूरत है लेखक का आर्थिक ज्ञान और विषय की समझ। अर्थशास्त्र की जानकारी रखने वाले लेखक के लिए इस विषय पर लिख पाना ज्यादा आसान होगा। आर्थिक फीचर में अर्थशास्त्र, वाणिज्य, व्यवसाय प्रबंधन, सांख्यिकी, बाजार आदि विषयों की बुनियादी जानकारी जरूरी है। इसके ज्ञान के बगैर आर्थिक क्षेत्र की जटिलताओं को नहीं समझा जा सकता। आर्थिक विषयों के लेखन में कुछ खास पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। ऐसे पारिभाषिक शब्दों की

सही समझ के बगैर प्रयास करना संभव नहीं होगा। आर्थिक लेखन में जटिल पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। इसकी बजाय ऐसी भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए जिससे पाठक आसानी से आपकी बात समझ सके। कुछ आम पारिभाषिक शब्द जैसे शेयर सूचकांक, सेंसेक्स, आयकर अधिनियम की खास धाराएं, आउटसोर्सिंग, बचत योजनाएं, पब्लिक इश्यू, विनिवेश आदि का प्रयोग धड़ल्ले से किया जाता है। लेकिन इन शब्दों का प्रयोग वही लेखक कर सकते हैं जो इनके अर्थ ठीक से समझते हों।

### 8.5.2 प्रकाशन की प्रकृति

समाचार पत्रों की प्रकृति के अनुसार आर्थिक फीचर का स्वरूप भी तय होता है। दैनिक समाचार पत्र के व्यापक पाठक वर्ग को ध्यान में रखकर विषय का चयन किया जाता है और उसकी प्रस्तुति भी उसी के अनुरूप की जाती है। आर्थिक पत्रिका के लेखन में विषय की गहराई का खास ध्यान रखा जाता है। कुछ पत्रिकाओं में आर्थिक मुद्दों के लिए पृष्ठ सुरक्षित रहते हैं। इन पृष्ठों पर लेख, फीचर, रिपोर्ताज, विश्लेषण, सलाह आदि प्रकाशित होते हैं। आर्थिक क्षेत्र में लेखन की स्थिति में लगातार परिवर्तन हो रहा है। आम जनता में इसके महत्व को देखते हुए सभी पत्र–पत्रिकाओं में इसे अब अधिक स्थान दिया जा रहा है। तकनीकी विकास और निवेश के नित नए विकल्प आने से आम जनता की रुचि आर्थिक रपटों के प्रति बढ़ी है। इसलिए अब इस क्षेत्र में फीचर के अवसर भी लगातार बढ़ रहे हैं।

### 8.5.3 विषय की प्रासंगिकता

आर्थिक फीचर में विषय के चयन का बहुत महत्व है। विषय सामयिक होगा, तभी वह पाठकों को आकर्षित करेगा। विषय का चयन बहुत सोच, समझ कर करना चाहिए। विषय ऐसे हों जो समाचार पत्रों में चर्चा में हों। ऐसे विषयों को आम पाठक के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया जाना चाहिए। यहां कुछ उदाहरण सामने रखना उचित होगाः शेयर बाजार में जब लगातार तेजी रहती है तो सेबी कई तरह के ऐसे निर्देश जारी करती है जिसमें निवेशकों को सतर्क रहने को कहा जाता है। बाजार की तेजी में कुछ धूर्त कंपनियां और ऑपरेटर भोले–भाले निवेशकों को मूर्ख बनाने की कोशिश करते हैं। ऐसी स्थिति में निवेशकों को चौकन्ना रखने के बारे में आर्थिक फीचर सटीक हो सकता है। दूसरे उदाहरण में हम देख सकते हैं कि आज किस तरह से खुदरा कारोबार (रिटेलिंग) को संगठित क्षेत्र में लाया जा रहा है। इसका असर परंपरागत कारोबारों पर क्या होगा? रोजगार के अवसर पर क्या प्रभाव पड़ेगा? ऐसे विषयों पर फीचर लिखे जा सकते हैं। जरूरी नहीं है कि घटना के बाद ही आर्थिक फीचर लिखे जाएं। जैसा कि आपने पहले पढ़ा, बजट आने से पहले बजट से की जा रही उम्मीदों पर आर्थिक फीचर लिखे जा सकते हैं। इसी प्रकार बाढ़–सूखे से होने वाली आर्थिक क्षति और उससे बचाव की जरूरत पर भी फीचर संभव हैं। दो देशों के बीच आर्थिक संबंधों पर तब फीचर लिखे जा सकते हैं जब दोनों देशों के प्रमुखों की कोई बैठक होने वाली हो। मानसून शुरू होने के बाद देश की आर्थिक स्थिति का आकलन और इसका बाजार, विशेष रूप से शेयर बाजार पर प्रभाव का आकलन भी किया सकता हैं।

## 8.6 सामग्री का संकलन

विषय के चयन के बाद आपको आवश्यक सामग्री का चयन करना होगा। विषय पर पहले किए गए अध्ययन, आंकड़े, अन्य तथ्यों का संकलन, विशेषज्ञों की राय आदि को एकत्र कर आप उनके आधार पर फीचर तैयार कर सकते हैं। आइए, सामग्री के संकलन पर विचार करें।

### 8.6.1 विषय पर शोध और अध्ययन

एक अच्छे फीचर लेखक को हमेशा जागरूक रहना चाहिए। निरंतर इस क्षेत्र के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करते रहना चाहिए और जरूरी तथ्यों और आंकड़ों को एक डायरी में नोट करना चाहिए। इससे फीचर लिखने में मदद मिलेगी। जिस विषय पर फीचर लिखना है उसकी गहरी जानकारी के लिए पुस्तकालय में संदर्भ ग्रंथ, प्रकाशित सामग्री की फाइल आदि को देखना चाहिए। सभी पक्षों के पर्याप्त अध्ययन के पश्चात् फीचर लिखना चाहिए ताकि कोई महत्वपूर्ण पहलू छूट न जाए।

### 8.6.2 तथ्यों का संकलन

आर्थिक फीचर में आंकड़ों का बहुत महत्व होता है। आंकड़ों का विश्लेषण सुरूचिपूर्ण ढंग से करना चाहिए। जिससे पाठक आसानी से समझ सकें। आंकड़ों का संकलन सरकारी और गैर–सरकारी स्रोतों से किया जा सकता है। उदाहरण के रूप में, अगर देश में काला धन और इस पर लगाम जैसे विषय पर फीचर लिखना है तो सबसे पहले काले धन की व्याख्या करनी होगी। इसके स्रोत क्या है और यह कैसे बनता है? काले धन का आतंकवाद और ड्रग से क्या संबंध है। इस विषय पर सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों के अध्ययनों और रिपोर्टों को देखना जरूरी है। सभी पक्षों के अध्ययन के बाद इस पर अच्छा फीचर लिखा जा सकता है।

### 8.6.3 साक्षात्कार

आर्थिक फीचर में साक्षात्कार का बड़ा महत्व है। विशेषज्ञों से बातचीत के बाद फीचर का स्तर बढ़ जाता है। फीचर के विषय के हिसाब से अर्थशास्त्रियों, विशेषज्ञों, संबद्ध सरकारी अधिकारियों, राजनेताओं, उपभोक्ताओं आदि विभिन्न संबद्ध लोगों से बातचीत करनी चाहिए। साक्षात्कार करने से पहले विषय को पढ़–समझ कर एक प्रश्नावली बना लेनी चाहिए। साक्षात्कार मिलकर, फोन से या ई–मेल के जरिए भी लिया जा सकता है। विशेषज्ञ जो राय समाचार पत्र, टी. वी और रेडियो में देते हैं, उसे भी फीचर में उद्धृत किया जा सकता है।

### 8.6.4 अन्य सामग्री

आर्थिक फीचर को रोचक बनाने के लिए इसमें संबद्ध रेखाचित्र, तालिका, कार्टून, फोटो आदि का प्रयोग करना चाहिए। आर्थिक फीचर के विषय प्रायः शुष्क होते हैं इसलिए इनका प्रयोग यहां उपयुक्त होगा। आजकल हिंदी और अंग्रेजी के अखबारों में छपने वाले आर्थिक फीचरों में इस तरह के रेखाचित्र, फोटो आदि का प्रयोग बहुतायत से किया जा रहा है।

## 8.7 सामग्री का संयोजन और संपादन

अभी हमने चर्चा की कि आर्थिक फीचर लिखने के पहले किस तरह से सामग्री जुटाएं। सामग्री जुटाने के बाद उसे ध्यान से पढ़ कर देखें कि कौन सी सामग्री फीचर से सम्बद्ध है। उस सामग्री को एक जगह रखें। फिर देखें कि कोई और जरूरी, पक्ष छूट तो नहीं रहा। अगर ऐसा लगता है तो उसकी जानकारी को भी जुटाएं। आंकड़े, विशेषज्ञों से बातचीत आदि को एक जगह रखें। फिर अपने फीचर को तथ्यों और प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करें।

**बोध प्रश्न 2**

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) क्या कोई भी फीचर लेखक आर्थिक फीचर लेखक बन सकता है? आर्थिक फीचर के लेखन में किन–किन योजनाओं का होना आवश्यक है?

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

2) आर्थिक फीचर के लिए विषय का चयन करते हुए किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

3) आर्थिक फीचर में आकड़ों, विशेषज्ञों की राय के महत्व पर प्रकाश डालिए।

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

## 8.8 लेखन की प्रस्तुति

जब आर्थिक फीचर लेखन की तैयारी पूरी हो जाए तो अपनी सामग्री का ठीक से अध्ययन कर लें। इसका आकार तय करें। आकार कई बार समाचार पत्र में इसके लिए नियत स्थान के अनुसार तय किया जाता है। ऐसे में उसी आकार के अनुरूप

अपने फीचर को इस तरह से लिखें कि कोई भी महत्वपूर्ण भाग छूट न जाए। आर्थिक फीचर के मूल रूप से तीन भाग होते हैंः आरंभ, मध्य और अंत।

### 8.8.1 आरंभ

आरंभ में आर्थिक फीचर की विषय वस्तु क्या है और यह किसके लिए है, यह स्पष्ट किया जाता है। आरंभ में विषय वस्तु की ओर संकेत कर सकते हैं। पाठक वर्ग को ध्यान में रखते हुए इसकी शुरूआत रोचक ढंग से करनी चाहिए। जरूरी नहीं हैं कि सभी आर्थिक फीचर समस्या–प्रधान ही हों। विकास के मुद्दों से जुड़े फीचर की शुरूआत काफी रोचक और तुलनात्मक ढंग से की जा सकती है। जैसे, पहले स्थितियाँ ऐसी थीं जो अब बदल कर ऐसी हो गई हैं। यहां बैंकिंग आदि के क्षेत्र में आए परिवर्तनों को उदाहरण के रूप में ले सकते हैं।

### 8.8.2 मध्य

फीचर के मध्य भाग में मुख्य सामग्री दी जाती है। यहां विषय वस्तु को बड़े ही क्रमवार और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए। इस भाग में आंकड़े, विशेषज्ञों की राय आदि का उल्लेख उचित है। आरंभ के बाद मध्य तक पहुंचते–पहुंचते यह हो जाना चाहिए कि लेखक ने अपने फीचर की विषय वस्तु के अनुरूप अपने तर्क प्रस्तुत कर दिए हैं।

### 8.8.3 अंत और शीर्षक

फीचर के अंतिम भाग में विषय वस्तु का निष्कर्ष या समाधान दिया जाता है। कई बार पाठकों को किन्हीं खास स्थितियों से सावधान रहने का संकेत दिया जाता है। उदाहरण के लिए, शेयर बाजार पर ऐसे समय में आप फीचर लिखें जब वह रिकार्ड ऊंचाई पर हो तो अपने पाठकों को जरूर सावधान करें कि ऐसी तेजी के माहौल में वे निवेश सोच–समझ कर करें। इसलिए कि अप्रत्याशित तेजी में ही छोटे निवेशक फंसते हैं। फीचर का शीर्षक ऐसा हो जिससे फीचर की विषय वस्तु का न सिर्फ भाव स्पष्ट हो जाए, बल्कि वह आकर्षक भी लगे।

## 8.9 भाषा और शैली

आर्थिक फीचर की भाषा सरल होनी चाहिए। साहित्यिक पांडित्य से बचना चाहिए। आर्थिक फीचर में आर्थिक क्षेत्रों के बहुत से विशिष्ट शब्द आते हैं। कोशिश यह होनी चाहिए कि उन शब्दों के भावों को सरल भाषा में लिखा जाए, जिसे आम पाठक भी आसानी से समझ सकें। शैली का चयन भी सुरूचिपूर्ण हो। उसमें प्रवाह होना चाहिए, जिससे विषय अपने आप सरल ढंग से बढ़ता चला जाए। इसका अर्थ यह नहीं कि आप आर्थिक शब्दावली का प्रयोग बिल्कुल नहीं करें। आर्थिक जगत के आम शब्द जैसे पूंजी बाजार, शेयर, डिबेंचर, इक्विटी, आवक, शुद्ध लाभ, कारोबार जैसे शब्दों का सही प्रयोग तभी संभव है जब लेखक इनके अर्थ को बखूबी जानता हो। इसी प्रकार थोक मूल्य सूचकांक, सेंसेक्स, विनिवेश, गरीबी रेखा, प्रति व्यक्ति आय, मुद्रा अवमूल्यन, विदेशी मुद्रा विनिमय दर आदि शब्दों को समझे बिना इनका प्रयोग सटीक नहीं हो सकता। शैली को रोचक बनाने के लिए विषय वस्तु को आम आदमी के दैनिक अनुभव से जोड़ना चाहिए जिससे फीचर आकर्षक बन सके और उसकी पठनीयता बढ़ सके।

**बोध प्रश्न–3**

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) आर्थिक फीचर के लेखन से पहले किस प्रकार सामग्री एकत्रित की जाती है?

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

2) आर्थिक फीचर का शीर्षक तय करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

3) आर्थिक फीचर की भाषा और शैली का क्या महत्व है?

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

## 8.10 सारांश

- इस इकाई को पढ़ने के बाद आप आर्थिक फीचर की उपयोगिता से भली–भांति परिचित हो गए होंगे। प्रत्येक देश की प्रगति और समृद्धि अर्थव्यवस्था पर भी निर्भर करती है। यदि आप आर्थिक फीचर के लेखन के क्षेत्र में आना चाहते हैं तो आपको इस क्षेत्र का पर्याप्त ज्ञान हासिल करना होगा। यह जानना होगा कि आर्थिक क्षेत्र के अंतर्गत कौन–कौन से विषय आते हैं और फीचर के लिए किन विषयों का चयन प्रासंगिक और महत्वपूर्ण होगा।

- आर्थिक फीचर के क्षेत्र को मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों में विभाजित कर सकते हैं। आर्थिक विकास से संबंधित फीचर, वाणिज्य और व्यापार संबंधी फीचर और बजट संबंधी फीचर। आर्थिक विवाद के दो मुख्य क्षेत्र हैं– कृषि और उद्योग। उद्योग में सेवा क्षेत्र का महत्व बहुत बढ़ गया है। इसके अतिरिक्त भी आप समाज के कमजोर वर्गों और आर्थिक उत्थान जैसे विषयों पर फीचर तैयार कर सकते हैं।

उत्पादन, वितरण और विनिमय के विभिन्न क्षेत्रों को आर्थिक फीचर का विषय बनाया जा सकता है।

- विषय तय करने के बाद उसके लिए सामग्री का संकलन करें। आर्थिक आंकड़ों का संकलन निरंतर करते रहें और अवसर के अनुरूप इनका प्रयोग करें। सरकारी दस्तावेजों, शोध पत्रों, सर्वेक्षणों, रिपोर्टों का अध्ययन करें। विशेषज्ञों की राय लें। विषय से संबद्ध फोटो, कार्टून और तालिकाएं फीचर में जान डालती हैं।

- सामग्री के अध्ययन के बाद फीचर की रूपरेखा तय करें, फिर लिखना शुरू करें। उद्देश्य स्पष्ट हो तो फीचर अपनी दिशा से नहीं भटकेगा। तथ्यों और आंकड़ों से अपनी बात को स्पष्ट करें। क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से अपनी बात को आगे बढ़ाएं। निष्कर्ष, समस्या का समाधान और समस्या के प्रति सचेत करने की बात फीचर के अंत में हो। फीचर का शीर्षक विषय को इंगित करने के साथ आकर्षक होना चाहिए।

- आर्थिक फीचर में विशेष पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान आवश्यक है। फीचर की भाषा सरल और पाठक वर्ग के अनुकूल होनी चाहिए। शैली नयी और आकर्षक होनी चाहिए। उम्मीद है कि इस इकाई को पढ़ने से आपको आर्थिक फीचर लेखन में मदद मिलेगी।

**अभ्यास**

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) महंगाई के युग में मध्यम वर्ग के घरेलू बजट की उपयोगिता पर लगभग 100 लाइनों में टिप्पणी लिखिए।

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

2) गांवों में तेजी से तकनीकी सुविधाएं बढ़ रही हैं। क्या इस विषय को आर्थिक फीचर के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है? कारण बताइए।

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

3) पेट्रोलियम की बढ़ती कीमत पर फीचर लिखने के लिए आप क्या–क्या तैयारी करेंगे? उल्लेख कीजिए।

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

4) उक्त विषय के लेखन के लिए एक रूपरेखा तैयार कीजिए।

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

5) मुद्रास्फीति और महंगाई पर लगभग 250 शब्दों में फीचर लिखिए। इस फीचर के लिए आप थोक मूल्य सूचकांक में वृद्धि, मूलभूत जरूरी चीजों के बाजार भाव और आम लोगों की तकलीफों को आधार बनाइए।

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

## 8.11 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

1) अर्थव्यवस्था से जुड़े विषयों से संबंधित लेख आर्थिक फीचर कहलाते हैं। आर्थिक फीचर लिखकर आप समाज और राष्ट्र की सेवा कर सकते हैं। अर्थव्यवस्था पर समाज की प्रगति निर्भर करती है। अर्थव्यवस्था से संबंधित विभिन्न समस्याओं और पहलुओं को फीचर का विषय बनाकर आप समाज को जागरूक और सरकार को सक्रिय कर सकते हैं।

2) आर्थिक विकास के मुख्य दो क्षेत्र हैं–कृषि एवं उद्योग। उद्योग के अंतर्गत सेवा क्षेत्र का महत्व अब बहुत बढ़ गया है। कृषि हमारी खाद्यान्न की आवश्यकताओं को पूरा करती है तो उद्योग जीवन की अन्य भौतिक आवश्यकताओं को।

3) उदारवादी अर्थव्यवस्था में रोजगार के नए अवसर आए हैं तकनीक के इस युग में बीपीओ अर्थात् 'बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग' के क्षेत्र में रोजगार का बहुत बड़ा विश्व बाजार हमारे लिए खुल गया है।

4) बजट का अर्थ है आय–व्यय का ब्यौरा। प्रत्येक देश, राज्य और संस्थान में बीते वर्ष के आय व्यय का विवरण और आगामी वर्ष के आय व्यय की योजनाएं प्रस्तुत की जाती हैं। इन्हें ही बजट कहा जाता है।

**बोध प्रश्न 2**

1) कोई भी फीचर लेखक आर्थिक फीचर लेखक नहीं बन सकता। इसके लिए विषय का पर्याप्त ज्ञान आवश्यक है।

2) देखें, विषय का चयन से संबंधित भाग।

3) आर्थिक फीचर में आंकड़ों का बड़ा महत्व होता है। आंकड़ों के पैमाने से आर्थिक प्रगति, ठहराव या गिरावट का पता लगता है। आंकड़ों के तुलनात्मक अध्ययन से हम समस्या की गहराई जान सकते हैं। आंकड़ों से ही सही निष्कर्ष और समाधान प्रस्तुत किए जा सकते हैं। विशेषज्ञों की राय से आर्थिक दशा का विश्लेषणात्मक ज्ञान होता है।

**बोध प्रश्न 3**

1) इसके लिए सामग्री संकलन से सम्बन्धित भाग देखें।

2) विषय से संबद्ध हो, समस्या का संकेत या समाधान हो, छोटा परंतु रोचक हो।

3) फीचर की भाषा सरल और सहज होनी चाहिए और इसमें साहित्यिक पांडित्य नहीं होना चाहिए।

**अभ्यास**

1) महंगाई की समस्या सबके लिए गंभीर है परन्तु मध्य वर्ग के लिए कुछ खास गंभीर है। अपने अनुभव से देखें कि मध्य वर्ग की गृहणियां किस तरह से अपना बजट बनाती हैं। महंगाई पर प्रकाशित होने वाले लेखों को भी पढ़ सकते हैं।

2) तकनीकी विकास से गांव सीधे रूप से पूरे विश्व से जुड़ गए है। टी.वी. इंटरनेट के माध्यम से वे निवेश के नए अवसर जान रहे हैं। इस विषय पर लेखों को पढ़ें और अपने आसपास देखकर आत्मसात करें।

3) और 4) का उत्तर स्वयं लिखिए।

5) मुद्रास्फीति अर्थात मुद्रा की खरीद शक्ति में ह्रास। आसान शब्दों में इसे महंगाई का बढ़ना समझें। यह देखें कि अभी प्रति व्यक्ति आय और मुद्रास्फीति की दर क्या है? इन सभी के तुलनात्मक अध्ययन से इस पर अच्छा फीचर लिखें और शीर्षक भी दें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY